ज़ायके का जादू और गुप्त मसाला

blog raj

राइस कुकर में सीटी बजते ही विक्रम के हाथ कांप उठे। अनन्य चिल्लाई, "विक्रम, सिर्फ पाँच मिनट बचे हैं और मुख्य जज मेहरा जी तुम्हारी डिश चखने आ रहे हैं!" विक्रम ने आँखों में चमक लाकर कहा "बेफिक्र रहो अनन्या, आज हमारी मेहनत इतिहास रचेगी।"

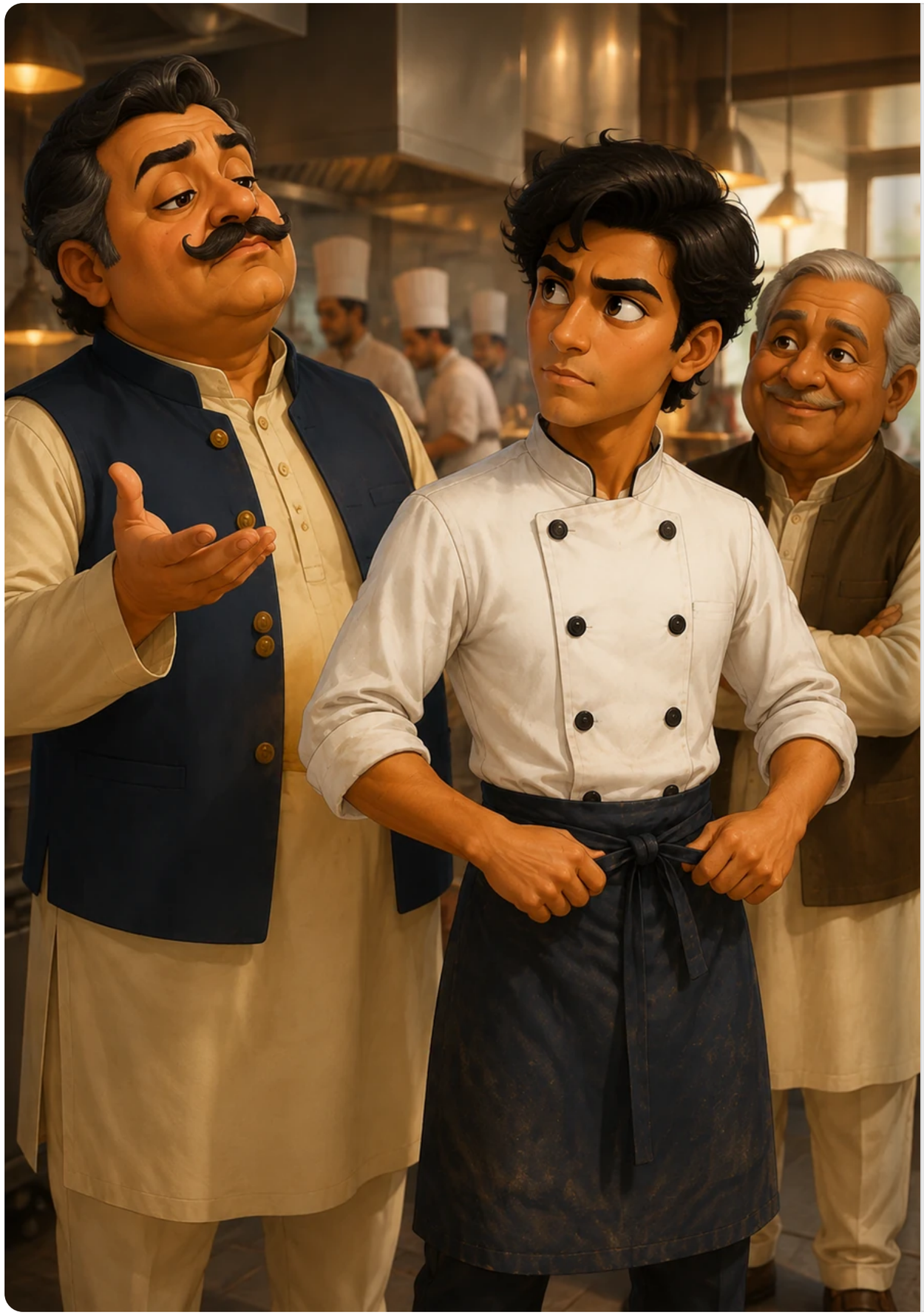

रॉयल डाइनिंग के मालिक कपूर साहब ने मुस्कुराते हुए विक्रम व ताना मारा, "एक छोटे से ढाबे का शेफ मेरे स्टार शेफ्स का सामना कै करेगा?" विक्रम ने शांति से अपनी एप्रन बांधी और कहा, "खाने में ज़ायका पैसे से नहीं, दिल के प्यार से आता है कपूर साहब।" रघु काव ने विक्रम का हौसला बढ़ाते हुए कहा, "इसे साबित करके दिखाओ बेटा।"

प्रतियोगिता शुरू होते ही पूरी रसोई में हलचल मच गई। अनन्या तेज़ी से सब्जियाँ काटना शुरू किया और पूछा, "विक्रम, क्या हम दादाजी की वो गुप्त रेसिपी बना रहे हैं?" विक्रम ने तेल में मसाले तड़क हुए कहा, "हाँ अनन्या, लेकिन एक नए अंदाज़ के साथ।" तभी जज मेहरा जी उनके पास आकर बोले, "खुशबू तो बेहतरीन है, लेकिन असली परीक्षा स्वाद की होगी।"

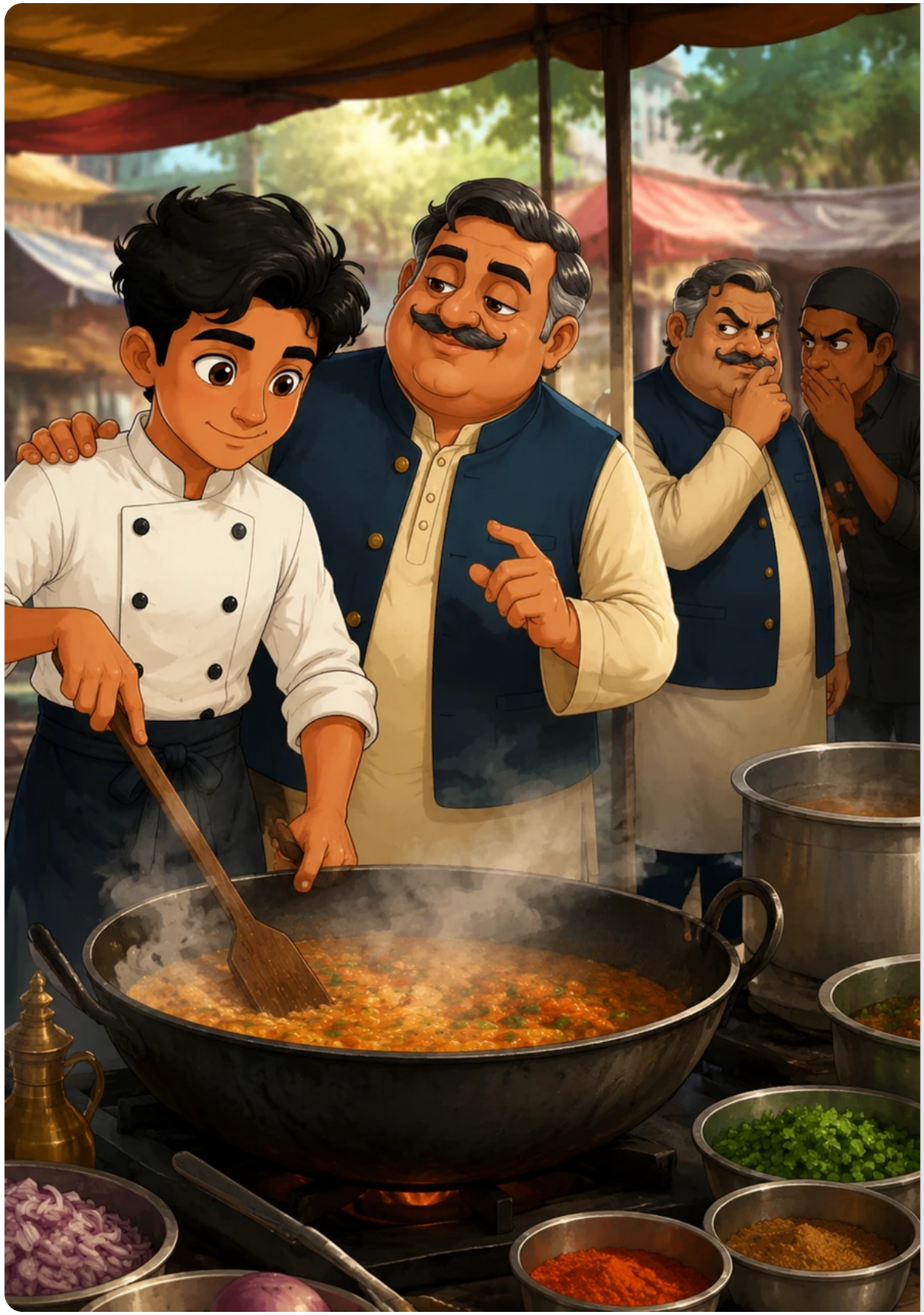

कपूर साहब ने दूर से विक्रम की कड़ाही से उठती महक को सूंघ
और चिढ़ गए। उन्होंने अपने सहायक से फुसफुसाकर कहा, "पता क
कि यह लड़का क्या पका रहा है, इसकी खुशबू से सब आकर्षित हो र
हैं!" रघु काका ने कपूर की चाल पहचान ली और विक्रम से कहा,
"अपना ध्यान मत भटकने देना, तुम्हारी कड़ाही ही तुम्हारी ढाल है।"

विक्रम ने मटकी में उबलती करी में चुटकी भर लाल मसाला छिड़का। अनन्या ने गहरी साँस लेकर कहा, "वाह विक्रम! इस महक ने तो बचपन के दिनों की याद दिला दी।" मेहरा जी ने अपनी डायरी में कुछ लिखते हुए टिप्पणी की, "इस पकवान में कोई खास बात है, ऐसा स्वाद मैंने बरसों से नहीं चखा।"

समय तेज़ी से बीत रहा था और आख़िरी दस मिनट बचे थे। विक्र
ने थाली सजाते हुए अनन्या से कहा, "अनन्या, ताज़ा धनिया और मक्ख
से इसे आखिरी रूप दो!" रघु काका ने गर्व से कहा, "तुम्हारी मेहनत इ
थाली में साफ झलक रही है।" कपूर साहब ने अपनी डिश सजाते हुए
घमंड से कहा, "जीत तो मेरी ही होगी।"

अचानक विक्रम ने अपनी करी को चखा और उसके होश उड़ गए उसका गुप्त मसाला बदल दिया गया था और करी कड़वी हो चुकी थी अनन्या घबराकर बोली, "विक्रम! किसी ने हमारी करी में कड़वी जड़ी-बूटी मिला दी है!" कपूर साहब ने कोने में खड़े होकर मुस्कुराते हुए कहा "क्या हुआ छोटे शेफ, हिम्मत हार गए?"

जज मेहरा जी विक्रम के काउंटर की तरफ बढ़ने लगे थे और सि
दो मिनट बचे थे। रघु काका ने तुरंत विक्रम के हाथ में नींबू और इमली
रस थमाते हुए कहा, "घबराओ मत विक्रम, स्वादों का संतुलन ही सच्चे
शेफ की असली परीक्षा है!" विक्रम ने मुस्कुराते हुए कहा, "अनन्या,
आंच तेज़ करो, हम इस चुनौती को स्वाद में बदल देंगे!"

जज मेहरा जी ने विक्रम की डिश से पहली चम्मच उठाई और पूं हॉल में सन्नाटा छा गया। मेहरा जी ने आँखें बंद कीं और मुस्कुराकर बो "अद्भुत! कड़वाहट, खट्टास और मिठास का ऐसा अनोखा संतुलन मैंने कभी नहीं चखा।" कपूर साहब का चेहरा पीला पड़ गया और वे हकला हुए बोले, "यह कैसे संभव है?"

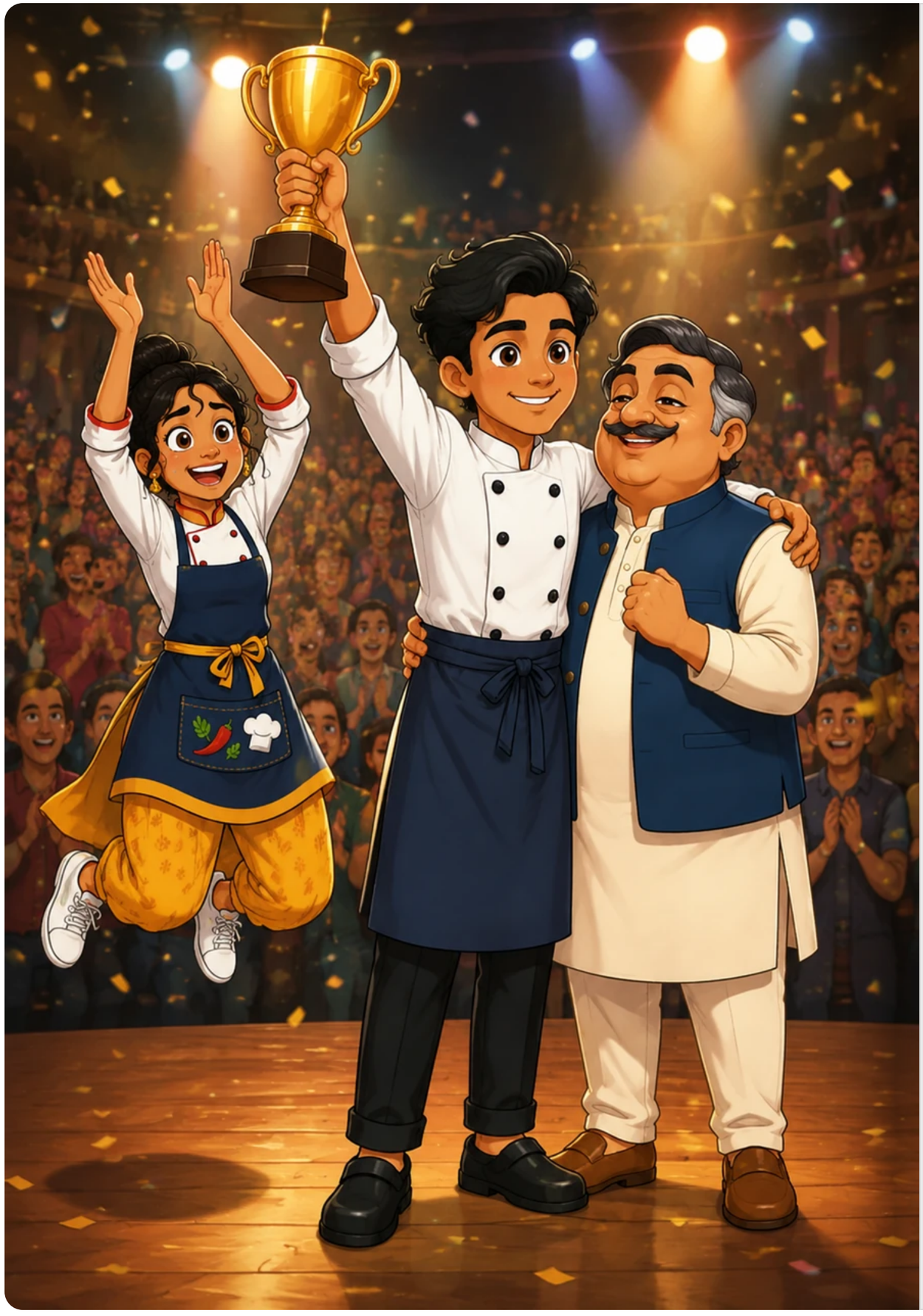

माइक पर घोषणा हुई, "इस साल के विजेता हैं—शेफ विक्रम!' पूरे हॉल में तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी और अनन्या ख़ुशी से झू उठी। विक्रम ने ट्रॉफी उठाकर रघु काका को गले लगाया और कहा, "र जीत हमारे विश्वास की है।" रघु काका ने प्यार से कहा, "सच्चा शेफ व है जो हर चुनौती का स्वाद बदल दे।"